Impact Factor-8.632 (SJIF) ISSN-2278-9308

February, -2026 ISSUE No - (DLXV)565

B.Aadhar

Single Blind Refereed & Peer-Reviewed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

Special Issue

International Conference

on

Classical Languages & Literatures : Past, Present & Future

अभिजात भाषा आणि साहित्य : भूत, वर्तमान आणि भविष्य

Chief Editor
Dr. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Executive Editor
Prof.(Dr) Vivekanand A. Rankhambe
Principal
Dr. Patangrao Kadam
Mahavidyalaya, Sangli

Editor
Dr. Naresh D. Pawar
Assistant Professor
Dr. Patangrao Kadam
Mahavidyalaya, Sangli

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

Volume A

Indian Languages

For Details Visit To : *www.aadharsocial.com* Aadhar Publications

Impact Factor – (SJIF) –8.632 **ISSN – 2278-9308**

B.Aadhar

Single Blind Refereed & Peer-Reviewed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

February - 2026
ISSUE No - (DLXV) 565

International Conference
on
Classical Languages & Literatures : Past, Present & Future
अभिजात भाषा आणि साहित्य : भूत, वर्तमान आणि भविष्य

Dr. Virag.S.Gawande
Chief Editor
Director
Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Prof.(Dr.) Vivekanand A. Rankhambe
Executive-Editors
Principal
Bharati Vidyappeth's
Dr. Patangrao Kadam Mahavidyalaya,Sangli

Dr. Naresh D. Pawar
Editor
Bharati Vidyappeth's
Dr. Patangrao Kadam Mahavidyalaya, Sangli

Aadhar International Publication
For Details Visit To : **www.aadharsocial.com**
© **All rights reserved with the authors & publisher**

B.Aadhar' **International Refereed & Peer-Reviewed Research Journal**
Impact Factor -(SJIF) –8.632, Issue NO, (DLXV) 565 -A
ISSN : 2278-9308
February 2026

INDEX- Volume - A
Indian Languages

No.	Title of the Paper	Authors' Name	Page No.
I	अभिजात भाषा म्हणजे नेमकं काय?	डॉ. तारा भवाळकर	12
II	मराठी भाषेचा अभिजाततेकडे झालेला ऐतिहासिक प्रवास	डॉ. सदानंद मोरे	16
III	अभिजात मराठी आणि आपण	प्राचार्य डॉ. शिरीष चिंधडे	18
IV	Classical Languages and Literatures in India	Prof. Dr. Maya Pandit	24
V	अभिजात भाषा: मराठी	अविनाश सप्रे	26
VI	महाराष्ट्र साहित्य परिषद: साहित्य चळवळीतील एक अग्रगण्य संस्था	प्रा. मिलिंद जोशी	28
VII	कर्नाटक-महाराष्ट्र सांस्कृतिक अनुबंध व अभिजात कन्नड भाषा आणि साहित्य	डॉ. चंद्रकांत वाघमारे	33
VIII	अभिजात भाषा प्राकृत का साहित्यिक वैभव: भूत, वर्तमान और भविष्य	डॉ. विकास चौधरी	38
IX	Classical Languages and Literatures: Past, Present, and Future	Prof. J. Kennedy	47
XI	Revisiting the Past: Classical Languages as Foundations for Global Humanities	**Zainab Abdulkarim**	48
	संस्कृत विभाग		
1	अभिजात संस्कृत साहित्य आणि समकालीन मूल्यशिक्षणाचा राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण 2020 च्या परिप्रेक्ष्यात अभ्यास	प्रा. (डॉ.) मृणालिनी आबासाहेब शिंदे	1
2	प्राचीन हस्तलिखित भाषा स्वरूप महत्व आणि संवर्धन	प्रा. रचना सौरभ शहा.	8
3	एतस्याः कृते संशोधनपत्रम्	डॉ. सौ. माधवी दिपकः जोशी	15
4	काल–देशयोः सेतुबन्धनम् विश्वसंस्कृतेः विज्ञानस्य च क्षेत्रे शास्त्रीयभाषाणां प्रभावः	भाग्यश्री जगदीश कुलकर्णी	24
	कन्नड विभाग		
5	ಶಾಸ್ತ್ರೀಯ ಭಾಷೆಗಳು ಮತ್ತು ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯದ ಭೂತ, ವರ್ತಮಾನ ಮತ್ತು ಭವಿಷ್ಯ	**Mrs. Ambika Thoke**	31
6	ಶಾಸ್ತ್ರೀಯ ಭಾಷೆ: ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯದ ಸ್ಥಾನಮಾನ	**Dr. Surekha .P Hortikar**	34
7	**ಶಾಸ್ತ್ರೀಯ ಕನ್ನಡ ಭಾಷೆ ಮತ್ತು ಸಾಹಿತ್ಯ: ಭೂತ, ವರ್ತಮಾನ ಮತ್ತು ಭವಿಷ್ಯ**	**Dr. Swami G.S**	37
8	ಕನ್ನಡ ಭಾಷೆ ಸಂಸ್ಕೃತಿ ಜಾಗತಿಕರಣ	**Dr. Gouramma yelangadi**	43

95	अभिजात भाषा आणि साहित्य एक नवा अभ्यास कु. साजिदा सरदार आरवाडे	479
96	दृष्टान्तपाठ अभिजात भाषेचा वैशिष्ट्यपूर्ण अविष्कार प्रा.डॉ. कोमल कन्हैय्या कुंदप	483
97	संतसाहित्य : मराठी भाषेच्या अभिजाततेचा मूलाधार डॉ. विजया प्रशांत पवार	487
	हिंदी विभाग	
98	भाषा के रूप में हिन्दी का बदलता स्वरूप डॉ. अमृता कुमारी	491
99	21 वीं सदी की हिंदी कविता का सामाजिक सरोकार डॉ. अशोक मोहन मरळे	494
100	अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की स्थिति डॉ. सचिन राजाराम जाधव	498
101	विश्व स्तर पर हिंदी की दशा डॉ. जाविद शमशुद्दीन शेख	503
102	अधूरे मनुष्य कहानी संग्रह में चित्रित नारी चेतना और संघर्ष डॉ. मच्छिंद्र भगवान कुंभार,अश्विनी पांडुरंग काटे	506
103	अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की स्थिति प्रो. (डॉ.) सौ. वाघ एस. पी.	510
104	अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की बढ़ती प्रतिष्ठा डॉ.स्नेहल श्रीकांत गर्जेपाटील	513
105	वर्तमान संदर्भ में 'संशय की एक रात' प्रा.अश्विनी जगदीप थोरात	522
106	हिंदी साहित्य का सामाजिक सरोकार प्रा. (डॉ) जगन्नाथ आबासो पाटील	525
107	हिंदी साहित्य और लोकजागरण – आधुनिक समाज सुधारक राष्ट्रसंत तुकडोजी प्रो. डॉ. अलका हेमंत वागदरे	530
108	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कबीर का साहित्य प्रा.डॉ.प्रकाश आठवले,	535
109	अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की स्थिति डॉ.अमोल तुकाराम पाटील	540
110	हिंदी साहित्य और मनोरंजन युवराज दगडू पाटील	544
111	हिंदी भाषा और साहित्य का सामाजिक सरोकार : हिंदी आदिवासी कहानी साहित्य के संदर्भ में निलेश सखाराम डामसे	489
112	शोध और उच्च शिक्षा में अभिजात साहित्य का महत्व श्री.विश्वास निवृत्ती पाटील	552
113	संजीव के उपन्यास 'फाँस' में सामाजिक सरोकार: एक विश्लेषण छबुताई रामचंद्र बाबर, , प्रो.डॉ.दशरथ मारुती वाघ,	557
114	दलितों की सामाजिक क्रांति का दहकता दस्तावेज : नागफनी' जयश्री वाघमारे . डॉ. मीना जाधव	562
115	हिंदी साहित्य और लोकजागरण' (भक्तिकाल के विशेष संदर्भ में) प्रो.(डॉ.)नितीन हिंदुराव कुंभार	566

'हिंदी साहित्य और लोकजागरण' (भक्तिकाल के विशेष संदर्भ में)

प्रो.(डॉ.)नितीन हिंदुराव कुंभार
हिंदी विभाग
डॉ.पतंगराव कदम महाविद्यालय, रामानंदनगर(बुर्ली) तह- पलूस, जि.सांगली(महाराष्ट्र) पिन 416308
मोबा. 8275377256 ई- मेल - nkumbhar98@gmail.com

शोध सार :-

साहित्यिक धरातल पर लोकजागरण की अवधारणा विकृति के विरोध में उभरी हुई अभिव्यक्ति के रूप में प्रस्तुत हुई है । मानव और साहित्य का अन्योन्यश्रित तथा अभिन्न संबंध रहा है । साहित्यकार अपनी जीवनानुभूतियों को ही भाषा के द्वारा अभिव्यक्त करता है, परंतु साहित्यकार का महत उद्देश्य केवल जीवनानुभवों की अभिव्यक्ति करना नहीं है बल्कि उसमें लोकजागरण की भावना भी महत्वपूर्ण है ।

हिंदी साहित्य में भक्ति आंदोलन मध्ययुग की सबसे युगान्तरकारी घटना है। इस घटना ने परम्परा से चले आ रहे जन जीवन में एक विक्षोभ उत्पन्न कर दिया। जिसके पीछे ग्यारहवीं सदी से प्रारम्भ सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन मुख्य कारण रहा। समाज में इस व्यापक परिवर्तन ने जाति-पाँति और धर्मों के भेद–भाव आधारित सामाजिक विभाजन की भावना पर कठोर आघात किया। सामन्तवाद के ह्रास और व्यापारिक पूँजीवाद के विकास ने सामान्य जनता और कारीगर को आर्थिक निर्भरता प्रदान की, जिसके फलस्वरूप सामन्ती शोषणकारी व्यवस्था के विरुद्ध भी विद्रोह की आवाज मुखर हुई। समाज में व्यापक परिवर्तन के फलस्वरूप साहित्य और संस्कृति प्रभावित होती है।

जब मुस्लिम साम्राज्य भारतवर्ष में दूर तक स्थापित हो गया तब परस्पर लड़ने वाले स्वतंत्र राज्य भी नहीं रहे । इस राजनीतिक परिवर्तन के परिणाम स्वरूप विशेषतः हिंदू जन समुदाय में उदासी - सी छा गयी थी । अपने पौरूष से हताश जाति के लिए भगवान की शक्ति और करूणा की ओर ले जाने के लिये भक्ति के सिवा दूसरा कोई मार्ग ही न था ? अतः जिस समय मुस्लिम शासक भारत में आए उस समय सच्चे धर्मभाव का बहुत कुछ ऱ्हास हो गया था। ऐसी स्थिति में भक्त कवि जनता के हृदय को संभालने और जाग्रत करने के लिए भक्तिभाव को जगाने लगे।

बीज शब्द :- साहित्य, भक्ति, अत्याचार शोषण, लोकजागरण ।

आलेख :- लोकजागरण में कबीर, तुलसी, जायसी, दादू आदि कावियों ने भक्ति आंदोलन के द्वारा निद्रा मे सोये हुए लोगों को जगाया। उन्होंने वर्ण, भेद, जाति आदि का विरोध करते हुए एकमत होकर सबको भक्ति की राह पर लाने का प्रयास किया। इस भक्ति आंदोलन की शुरूआत दक्षिण भारत से हुई। इस आंदोलन ने पहली बार देश के प्रत्येक भू–भाग के निवासियों को अपनी ओर आकर्षित किया। संतों ने न केवल सामाजिक अत्याचारों का विरोध किया, बल्कि प्रशासनिक स्तर पर होने वाले भ्रष्टाचार के विरुद्ध आम जनमानस को जाग्रत किया।

दादू कहते हैं–

"दादू सो मोमिन मोम दिल होई।
साईं कुं पहिचाने सोई।।
जोर न करे हराम न खाई।''
सो मोमिन भिस्ति में जाई (दादू दयाल ग्रंथावली, पृष्ठ, 151)।।"

ऐसा व्यक्ति योग्य शासक हो सकता है, जो जोर न करता हो और हराम का न खाता हो।

भक्तिकाल के अनेक संत समाज की तथाकथित कही जाने वाली निम्न जातियों से सम्बन्धित थे। कबीर जुलाहा थे, तो रैदास जाति से चमार थे। रैदास स्वयं लिखते हैं–

"मेरा जात कुटवाँ ढला ढोर डोवन्ता नितहिं बनारसी आस पास"

इसी असमानता का चित्रण इन संतों की वाणी में मिलता है। शोषण और अन्याय पर आधारित व्यवस्था का अंध समर्थन करने वाले समाज की कड़ी आलोचना इन संतों ने की है कबीर कहते हैं –

''कबिरा पुजै शालिग्राम को, मन की भ्रान्ति न जाय।

शीतलता सपने नहीं दिन -दिन अधिकी लाय।

जप तप दीखै थोथरा, तीरथ व्रत विश्वास।

सुआ सेंमल सेइया, ज्यों जग चला निरास।''

धर्म, जाति, वर्ग के नाम पर होने वाले पाखण्ड से ये भक्तिकालीन कवि परिचित थे, इसीलिए इन पाखण्डों का खुलकर विरोध करते थे। नानक व्यंग्य करते हुए कहते हैं –

''धोती ऊजल तिलकु गलि माला, अन्दरि क्रोधु पड़हि नाटसाला।

नाम विसारि माइआ मदु पीआ, बिनु गुरु भगति नाही सुखु थीआ।''

इन कवियों ने समाज में आर्थिक विषमता के आधार पर बनी व्यवस्था का भी विरोध किया। आर्थिक विषमता के इस दंश से तुलसी जैसे रचनाकार भी परिचित हैं – "खेती न किसान को, भिखारी को न भीख बलि, बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी ।। कहैं एक एकन सों कहाँ जाई का करी।"

भक्ति काल में सगुण या निर्गुण रूप की भक्ति ही नहीं की गई वरन् भक्ति के माध्यम से तदयुगीन सामाजिक जीवन में स्थित एक वर्ण या जाति के प्रति किए गए अत्याचार, अन्याय और शोषण के खिलाफ असहमति और विरोध का प्रदर्शन भी किया गया।

निष्कर्ष:-

निष्कर्षतः यह है कि भारतीय इतिहास में मध्यकाल राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा सामाजिक सभी दृष्टि से महत्वपूर्ण था। एक ओर जहाँ इस्लामी संस्कृति भारतीय समाजिक संरचना को प्रभावित कर रही थी तो वहीं इसकी पृष्ठभूमि में भक्ति आंदोलन का सूत्रपात भी होता है। उत्तरी भारत में चैदहवीं से सत्रहवीं शताब्दी में फैली भक्ति आंदोलन की लहर समाज के वर्ण, जाति, कुल और धर्म की परिसीमाओं का अतिक्रमण कर सम्पूर्ण जनमानस की चेतना में व्याप्त हो गयी थी। लोगों को सामाजिक, रूढ़ियों, भेदभाव आदि का विरोध करते हुए जागरण स्थापित कर भक्ति का मार्ग दिखाया गया। धार्मिक तथा सामाजिक जीवन में जागरण तथा भक्ति आंदोलन आवश्यक रहा। इस युग का साहित्य लोक जागरण का काव्य है - जनता के हृदय की वाणी है। उपरोक्त बातों से साफ जाहिर है कि भक्ति आंदोलन ने पूरे सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था को हिला कर रख दिया। भक्ति आंदोलन की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता इसका जन भाषा में रचा जाना है, इसीलिए साधारण जनता इसके साथ अपना तादात्म्य जोड़ पाती है।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।

2. हिंदी साहित्य की भूमिका - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी।

3. लोक जागरण और हिंदी साहित्य - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।

4.भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य, मैनेजर पाण्डेय, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली।

5. कबीर, हजारी प्रसाद द्विवेदी राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

6.लोकवादी तुलसी, विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली।